समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।
संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित
मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

- प्रकाशन दिनांक : १५ अक्टूबर २०१८
- वर्ष : २२ • अंक : ४ (निरंतर अंक : २५६)
- भाषा : हिन्दी
- पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

जैसे माता देवहूति ने अपने ब्रह्मवेत्ता पुत्र कपिल मुनि को गुरुरूप में स्वीकार कर ब्रह्मविद्या पायी...

...वैसे ही माँ महँगीबाजी ने इस युग में अपने ब्रह्मवेत्ता पुत्र पूज्य बापूजी को गुरुरूप में स्वीकार कर अनन्य गुरुनिष्ठा के द्वारा स्वरूप-स्थिति पायी ।

उनका जीवन एक प्रकाशस्तम्भ है पढ़ें पृष्ठ ६

श्री माँ महँगीबाजी का महानिर्वाण दिवस : ३ नवम्बर

पूज्य बापूजी के ५५वें आत्मसाक्षात्कार दिवस की कुछ झलकियाँ

सम्पन्न हुए सामूहिक श्राद्ध-कार्यक्रम, किया पितरों का तर्पण

आत्मिक दिवाली मनाने का संदेश देता है यह पर्व ७

पूज्य बापूजी का पावन संदेश ९

पौष्टिक तत्त्वों व ऊर्जा से भरपूर चुकंदर १५

गौ रक्षण व संवर्धन के प्रेरणास्रोत : संत

(गोपाष्टमी : १६ नवम्बर)

सनातन संस्कृति किसी एक समाज के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव-जाति के कल्याण के लिए है। प्राचीन काल से इस संस्कृति की महानता के रहस्यमय पहलुओं को जाननेवाले संत-महापुरुष भारत की पुण्यधरा पर अवतरित होते रहे हैं और देश एवं विश्व वासियों को अपने सत्संग-सान्निध्य एवं सद्ग्रंथों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के वरदानस्वरूप उपहारों का ज्ञान देकर लाभान्वित करते आये हैं। उनमें भी कुछ विरले करुणासिंधु महापुरुष सत्संग के साथ-साथ अपने सत्संगियों, भक्तों, शिष्यों के हृदय में निष्काम कर्मयोग की भी पावन प्रेरणा जगाकर विभिन्न सेवाकार्यों की पुण्य-सरिताएँ बहाते हुए अपनी संस्कृति के उन महान उपहारों का लाभ समाज को प्रत्यक्षरूप में दिलाते आये हैं। भारतीय संस्कृति का एक ऐसा ही अनमोल उपहार है गौ-महिमा की खोज।

हमारी संस्कृति में देशी गायों का अनेक दृष्टियों से अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है और उनके प्रति समाज में जो महत्त्व है, आदर भाव है वह भी हमारे संतों-महापुरुषों के कारण ही है। गाय अपने दूध, दही आदि पंचगव्यों द्वारा माता की तरह हमारा पालन-पोषण करती है तथा स्वस्थ समाज के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः हमारे शास्त्रों व महापुरुषों ने इसे माता का दर्जा दिया है।

संतों-महापुरुषों के उद्गार

"गौ-रक्षा हमारी आधारभूत आवश्यकता है। हम अपनी रक्षा के लिए (मानवमात्र की, प्राणिमात्र की रक्षा के लिए) गौ-रक्षा करते हैं, गौ तो कभी नहीं बोलती कि 'मेरी रक्षा करो।' बुद्धिमान समझते हैं कि गाय की रक्षा में स्वास्थ्य, मानवता, संस्कृति और पर्यावरण की रक्षा है।" - संत श्री आशारामजी बापू

"गाय हमारी ही नहीं मानव-समाज की माँ है, सारे राष्ट्र की और सारे विश्व की माँ है। गाय की रक्षा होती है तभी प्रकृति भी अनुकूल होती है, भूमि भी अनुकूल होती है।" - स्वामी शरणानंदजी

"गौ सनातन धर्म का एवं मातृवत्सलता का प्रतीक है।" - संत देवराहा बाबा

(शेष पृष्ठ ३ पर)

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २२ अंक : ४ (निरंतर अंक : २५६)
प्रकाशन दिनांक : १५ अक्टूबर २०१८ मूल्य : ₹ ३.५०
पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
राकेशसिंह आर. चंदेल
प्रकाशन-स्थल :
संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण-स्थल :
हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५.
सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

*Email: lokkalyansetu@ashram.org, *ashramindia@ashram.org
*Website: www.lokkalyansetu.org www.ashram.org

लोक कल्याण सेतु' रुद्राक्ष मनका योजना

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ३५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ६०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १३०		
(४) आजीवन :	₹ ३४०		

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

- पूज्य बापूजी का पावन संदेश..... ४
- उनका जीवन एक प्रकाशस्तम्भ है.....८
- उन्हें मिथ्या का महत्त्व नहीं होता - साँईं श्री लीलाशाहजी.....९
- आत्मिक दिवाली मनाने का संदेश देता है यह पर्व..... १०
- उसको तो हृदय में घुसाना पड़ेगा..... १२
- भारत-कल्याण के लिए गौ-रक्षा अनिवार्य - पं. मदनमोहन मालवीयजी..... १३
- भगवान के 'अमरप्रभु' और 'विश्वकर्मा' नामों का रहस्य.....१४
- घोड़े को पालो लेकिन घुड़सवार को मत भूलो.....१५
- स्वामिभक्त 'भला भाई'.....१६
- आप केवल एक बार उसे पाकर तो देखो.....१७
- पौष्टिक तत्त्वों व ऊर्जा से भरपूर चुकंदर.....१८
- धन्य हैं ऐसे शासक !.....१९
- भक्तों के जीवन-परिवर्तन के अनुभव - सचिन.....२०
- सब दुःखों को मिटाने का एक ही उपाय !..... २१
- पुण्यदायी तिथियाँ..... २२

* 'साधना प्लस न्यूज' चैनल टाटा स्काई (चैनल नं. ५४०), डिश टीवी (चैनल नं. ६७१), रिलायंस डिजिटल टीवी (चैनल नं. ४३१), राँची में जीटीपीएल (चैनल नं. ९८१), बिहार में मौर्या सिटी (चैनल नं. ३११) तथा "JioTV" एन्ड्रोइड एप पर उपलब्ध है।
* 'प्रार्थना' चैनल जम्मू में TechOne Cable पर उपलब्ध है।

* विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग *

SADHNA PLUS NEWS
रोज सुबह ७ बजे

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १०-०० बजे

मंगलमय
www.ashram.org/live
पर उपलब्ध

अपने तन का, मन का, धन का ठीक से उपयोग करो तो बहुत ऊँचाई पर जा सकते हो। अगर जहाँ-तहाँ खर्च कर दिया तो फिर परिणाम भी जहाँ-तहाँ का आता है। जैसे, फोर्ड नाम का लड़का था, बचपन से ही कम बोलता था और जवानी आयी तो अपनी शक्तियों का संचय करने की उसको तरकीब किसीने बता दी। शक्ति का ह्रास कैसे होता है यह उसने जान लिया था थोड़ा-बहुत। नीचे की इन्द्रियों से - शिश्न-इन्द्रिय से, काम-विकार की जगह से ऊर्जा नष्ट होती है, व्यर्थ का बोलने से ऊर्जा नष्ट होती है, व्यर्थ का सोचने से और भटकने से ऊर्जा नष्ट होती है। तो ऊर्जा को नष्ट होने से जिसने जितने अंश में बचाया उतना वह व्यक्ति ऊर्जावान होता है, शक्तिवान होता है। उस शक्ति को फोर्ड ने कम्पनी बनाने में लगा दिया और फोर्ड कम्पनी बनायी। दुनियाभर में फोर्ड गाड़ी आज भी मशहूर है। लेकिन यह कोई बड़ी बहादुरी नहीं है। मरनेवाला शरीर है... सुविधा में मरा, धन-सम्पत्ति पाकर मरा, अंत में कुछ नहीं। राजा नृग ने अपनी शक्ति राजसत्ता में लगायी और इतना बड़ा राजा हो गया कि ब्राह्मण कहते थे कि 'जिन दिशाओं में राजा नृग राज करते हैं उन दिशाओं को नमस्कार है!' लेकिन उस शक्ति को उसने अपनी व्यक्तिगत वाहवाही में खर्च किया, अपना व्यक्तिगत नाम हो बस। वास्तविक शक्ति के मूल स्वरूप की तरफ अभागा गया नहीं क्योंकि ब्रह्मज्ञानी गुरु नहीं मिले, सत्संग नहीं मिला।

तो एक होता है आधिभौतिक जगत में शक्ति का उपयोग करना। ऐसे लोग भी प्रसिद्ध तो हो ही जाते हैं। जो शक्ति का दुरुपयोग करते हैं वे तो ऐसे ही कीड़े-मकोड़ों की नाईं पैदा हो के मर जाते हैं।

दूसरा है शक्ति का आधिदैविक जगत में उपयोग करना। जिसने आधिदैविक जगत में शक्ति का उपयोग किया वह मरने के बाद स्वर्गलोक, पितृलोक आदि ऊँचे लोकों, यक्ष, गंधर्व, किन्नर आदि ऊँची योनियों को पाकर हजारों वर्ष ऊँचे लोकों में रह सकता है। लेकिन आधिदैविक शक्तियों का भी ह्रास होता है और आधिदैविक जगत में भी राग-द्वेष, उत्थान-पतन होता रहता है।

तीसरा होता है शक्ति का आध्यात्मिक सदुपयोग करना। आध्यात्मिक सदुपयोग करना मतलब - आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है? जीव क्या है, जगत क्या है? - इसके रहस्य की

उनका जीवन एक प्रकाशस्तम्भ है

(ब्रह्मलीन मातुश्री श्री माँ महँगीबाजी का महानिर्वाण दिवस : ३ नवम्बर)

पूज्य बापूजी की मातुश्री श्री माँ महँगीबाजी (अम्माजी) का जीवन-चरित्र हम सभीके लिए एक प्रकाशस्तम्भ है । अम्माजी का जीवन गुरुभक्तियोग का अभ्यास करनेवाले साधक-शिष्यों के लिए एक ऐसा उच्च आदर्श है, जिसका अनुसरण कर वे आसानी से पूर्ण गुरुकृपा के अधिकारी बन सकते हैं।

अम्माजी पूज्य बापूजी के बताये अनुसार भगवन्नाम-जप के साथ श्वासोच्छ्वास को निहारते हुए विश्रांति पाना आदि अंतर्मुखता के साधनों में लगी रहती थीं। गुरुआज्ञा-पालन एवं दृढ़ गुरुनिष्ठा से उनके अंतर में ऐसे आनंद एवं सुख का प्रादुर्भाव हो गया था, जिसके प्रभाव से अन्य कोई चीज-वस्तु तो क्या, भगवान को भी बाह्यरूप से पाने की कामना उनके हृदय में नहीं बची थी।

पूज्यश्री अक्सर अम्माजी के साथ विनोद करते थे। एक बार दशहरे का कार्यक्रम था, भक्तों ने आग्रह करके बापूजी को रामजी की पोशाक पहना दी और धनुष-बाण से सुसज्जित कर दिया। सत्संग-कार्यक्रम समाप्त होने के बाद पूज्यश्री उसी पोशाक में आवास पर आ गये । मधुर, विनोदी लीला करते हुए पूज्य बापूजी ने सेवक से कहा : "कमरे में अँधेरा कर देना और प्रकाश मेरे ऊपर डालना।" उसके बाद अम्माजी की सेविका को क्या करना है, उसे बता दिया गया।

बापूजी रामजी के वेश में खिड़की पर खड़े हो गये, जैसे ही प्रकाश डाला गया, अम्माजी की सेविका ने कहा : "अम्मा ! अम्मा !! देखो, रामजी प्रकट हो गये !"

भक्तों के जीवन-परिवर्तन के अनुभव

स्नेहा, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) : मुझे अभी बापूजी से मंत्रदीक्षा नहीं मिली है। मेरी माँ मंत्रदीक्षित हैं, उनकी प्रेरणा से ही मैं आश्रम में आती हूँ। बापूजी से जुड़ने के बाद जीवन में बहुत अनुभव हुए हैं। छोटी-छोटी समस्याएँ तो खुद ही सुलझ जाती हैं। मन में आनंद और शांति रहती है।

भावना परमार, बड़ौदा : बापूजी से जुड़ने के बाद हमारा पूरा जीवन बदल गया। बापूजी के सत्संग में, आश्रम में जो मिलता है वह दुनिया में कहीं भी जाओ, चाहे चारों धामों की यात्रा कर लो पर वह रस, ज्ञान कहीं भी नहीं मिलेगा।

जिन संत ने समाजोन्नति के लिए अपना जीवन लगाया, हिन्दू धर्म को आगे बढ़ाने के लिए इतने बड़े स्तर पर कार्य किया, भारत को विश्वगुरु बनाना जिनका संकल्प है, वे संत क्या कभी ऐसे कार्य कर सकते हैं ! कोई थोड़ा भी विचार करे तो सच्चाई उसकी समझ में आयेगी।

अशोकभाई डाकरा, हीरा उद्योगपति, सूरत : मैं २५ सालों से बापूजी से जुड़ा हूँ। तब से कभी

दवाखाने नहीं गया। मुझे शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक - सब प्रकार का लाभ हुआ है, मेरा बल बढ़ा है। ईश्वर के प्रति श्रद्धा बढ़ी है। बापूजी की कृपा से जो कुछ मिला है, उसका वर्णन करने के लिए शब्द नहीं हैं।

बापूजी हिन्दू संस्कृति को आगे बढ़ाने का कार्य करते हैं, आदिवासी क्षेत्रों में भंडारे करवाते हैं, वहाँ सभीको ज्ञान, भक्ति के साथ कपड़े, अनाज, रोजमर्रा की चीजें, नकद दक्षिणा आदि देते हैं इसलिए धर्मांतरणवालों ने बापूजी के खिलाफ साजिश की है। समाज को ज्ञान, भक्ति, संस्कृति का जो अमृत मिलता था वह मिलना बंद हो गया, इससे देश को, समाज को, संस्कृति को बड़ा भारी नुकसान हो रहा है। सरकार का कर्तव्य है कि बापूजी को जल्द-से-जल्द रिहा करे।

चेतन वणकर, छोटा उदेपुर (गुज.) : मैं ३० साल से व्यसन करता था। ५ हजार रुपये की शराब हर महीने पी लेता था। एक ही बार बापूजी के आश्रम गया और शराब छूट गयी। मेरा पूरा जीवन परिवर्तित हो गया।

ठाकुरभाई डोडिया, भरथाना (गुज.) : मैं बापूजी से ३२ सालों से जुड़ा हूँ। पहले मैं दारू पीता था, जूआ खेलता था। जब पूज्यश्री से मंत्रदीक्षा ली तो सब बुरी आदतें अपने-आप छूट गयीं और जीवन को सही दिशा मिल गयी।

(संकलक : सचिन शेरे)

शुद्ध स्वर्णभस्मयुक्त सुवर्णप्राश टेबलेट

ये गोलियाँ बालकों के बौद्धिक, मानसिक तथा शारीरिक विकास के लिए अत्यंत उपयुक्त हैं। ये आयु, शक्ति, मेधा, बुद्धि, कांति व जठराग्नि वर्धक तथा उत्तम गर्भपोषक हैं। गर्भवती महिला इनका सेवन करके निरोगी, तेजस्वी, मेधावी संतान को जन्म दे सकती है। विद्यार्थी भी धारणाशक्ति, स्मरणशक्ति तथा शारीरिक शक्ति बढ़ाने के लिए इनका उपयोग कर सकते हैं।

रजत मालती

शुद्ध रजत भस्म से युक्त रजत मालती गोलियाँ आयुष्य, बुद्धि, नेत्रज्योति, वीर्य और कांति वर्धक हैं। ये रक्त को बढ़ाती हैं, मांसपेशियों को ताकत देती हैं। मस्तिष्क, नेत्र, मूत्रपिंड एवं वातवहनाड़ियों के लिए बल्य हैं। रक्ताल्पता (anaemia), पक्षाघात (paralysis), ऐंठन, धातुक्षयजन्य दुर्बलता, नेत्ररोग, हिस्टीरिया, वार्धक्यजन्य रोग, नपुंसकता आदि में विशेष लाभदायी हैं। श्रम, पढ़ाई, रात्रि-जागरण, शोक, भय आदि से उत्पन्न तकलीफों में खास फायदेमंद हैं।

मधु रक्षा (टेबलेट) मधुमेह के लिए एक प्रभावशाली औषधि

यह मधुमेह (diabetes) को नियंत्रित करने के लिए असरकारक आयुर्वेदिक औषधि है। इससे इंसुलिन सही मात्रा में स्रावित होता है, जिससे रक्तगत शर्करा की मात्रा पर बेहतर नियंत्रण प्राप्त करने में मदद मिलती है। इस दवा के नियमित सेवन से प्रतिरक्षा प्रणाली (immune system), तंत्रिका तंत्र (nervous system), हड्डियाँ व दाँत मजबूत बनते हैं। हृदय, रक्तवाहिनियों, आँखों तथा किडनियों की रक्षा होकर स्वास्थ्य में अभिवृद्धि होती है।

द्राक्षावलेह

यह पौष्टिकता से भरपूर है। यह शक्ति, चुस्ती एवं स्फूर्ति प्रदान करता है। अरुचि, रक्ताल्पता, शारीरिक कमजोरी एवं अम्लपित्त (hyperacidity) में लाभदायी है। यह यकृत (liver) के लिए लाभकारी है एवं रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। इसे गर्भवती महिलाओं को देने से माँ और संतान का स्वास्थ्य उत्तम होता है।

हृदय सुधा (सिरप)

यह हृदय की तरफ जानेवाली तमाम रक्तवाहिनियों को खोलने में मदद करता है। यदि आप हृदयरोग से पीड़ित हैं और डॉक्टर ने बायपास सर्जरी करवाने के लिए कहा है तो उससे पहले इस सिरप का प्रयोग अवश्य करें।

उपरोक्त सामग्री आप अपने नजदीकी संत श्री आशारामजी आश्रम या समिति के सेवाकेन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं। अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए एवं घर बैठे सामग्री प्राप्त करने हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७३०, ई-मेल : contact@ashramestore.com

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2018-20
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2020
LWPP No. PMG/HQ/045/2018-20
(Issued by PMG GUJ. valid upto 31-12-2020)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

आश्रमों में आयोजित सामूहिक श्राद्ध-कार्यक्रमों में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

इंदौर

कोलकाता

हरिद्वार

फरीदाबाद (हरि.)

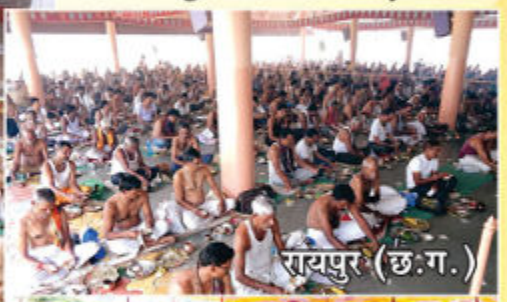
रायपुर (छ.ग.)

गाजियाबाद (उ.प्र.)

भुवनेश्वर

सरेया, जि. नवसारी (गुज.)

गरीबों, जरूरतमंदों में अनाज-वितरण एवं भंडारे

कोलकाता

हैदराबाद

सुमेरपुर (राज.)

सेद्राणा जि. पाटण (गुज.)

युवा सेवा संघ द्वारा विभिन्न स्थानों पर हुए 'तेजस्वी युवा शिविर'

भिलाई, जि. दुर्ग (छ.ग.)

रायता जि. ठाणे

राणापुर, जि. झाबुआ (म.प्र.)

राजपुरा, जि. धार (म.प्र.)

पटना

रतलाम

नंदिनी नगर, जि. दुर्ग

खरगोन (म.प्र.)

देश के अनेक घर-परिवारों को पावन करते हुए अब विदेश भी पहुँची 'अखंड दीपज्योति'

बाड़मेर (राज.)

भैरहवा (नेपाल)

काठमांडू (नेपाल)

लखनऊ

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।